इतिहास :–

इतिहास के झरोखे से जैतारण की स्थापना एवं इतिहास

विक्रम संवत् 1343 में रतनपुरा गांव में धोकलराम नाम का गुर्जर रहता था । उसके दो पुत्रियां थी । बड़ी का नाम जैती तथा छोटी का नाम खैती था । एक दिन जैती के बाड़े में से मोरनेचोर गाये चुराकर ले गए । उसी समय सिंध के पांच शहजादे जो कि सगे भाई थे । पाली के पहलवानों के हाथो युद्ध हारकर जंगल में भटकते हुए जैती गुजरी के बाड़े के पास पहुंचे । जैती गुजरी ने उन पांचो को शरण देते हुए अपनी गाये चोरी होने की बात बताई । पांचो शहजादों ने जैती को अपनी धर्म बहन बनाकर गायों की खोज में निकल गए । गिरी गांव के पास पांचो शहजादों ने मोरने चोरो से युद्ध किया । जिसमें सैयद अली मारा गया तथा दूसरा भाई सैयद मिर्जा अली ने भी गायों को वापस लाते वक्त रतनपुरा एवं फूलमाल के बीच प्राण त्याग दिए । उस जगह आज भी मिर्जा अली की दरगाह बनी हुई तथा मिर्जा नाड़ी भी बनी हुई हैं । शेष तीनो भाइयों ने घायलावस्था में जैती गुजरी को गाये सुपुर्द कर अपने प्राण त्याग दिए । उनके बलिदान को देख कर जैती ने भी जिंदा समाधी लेने का निश्चय किया । उसी समय भाकरसिंह सिंघल राठौड़ उधर से निकले तथा दो नदियों के संगम को देखकर वहां नगर बसाने का निश्चय किया तथा जैती गुजरी से इजाजत मांगी । तब जैती गुजरी ने अपनी गाये भाकरसिंह सिंघल को सुपुर्द कर उस नगर का नाम जैतारण रखने को कहां ।

कहते हैं कि जैती की गायों के लिए रण हुआ था इसलिए संवत 1354 में जैतारण नगर की स्थापना हुई । इस पर भाकरसिंह की पांच पीढ़ियों ने राज्य किया तत्पश्चात् जोधपुर के राजा राव सूजाजी जोधा राठौड़ के कंवर राव ऊदाजी ने जैतारण पर विजय हासिल कर राज्य हासिल किया तथा संवत् 1505 में राव ऊदाजी का राजतिलक हुआ तथा संवत् 1565 में उनके देहान्त के पश्चात् उनके पुत्र खींवकरण को राजगद्दी पर बैठाया । इसी दौरान दिल्ली के बादशाह शेरशाह सूरी ने मारवाड़ पर आक्रमण कर दिया । इसी युद्ध में खींवकरण वीरगति को प्राप्त हो गए ।

खींवकरण के वीरगति के प्राप्त होन के पश्चात् उनके पुत्र राव रतनसिंह को जैतारण की राजगद्दी पर बैठाया परन्तु देववंश जिस योगीराज ने राव रतनसिंह के पिता माह राव ऊदाजी को वर देकर जैतारण का राज दिया । संयोगवश उन्हीं सिद्ध योगीराज के श्राप से जैतारण से उदावत वंश का राज्य समाप्त हो गया । परन्तु योगीराज से माफी मांगने पर उन्होने कहा कि 'क्योर ऊदा धुरे ऊदा' यानि की जैतारण के आस–पास के क्षेत्र में ऊदावत राठौड़ रह सकते हैं । परन्तु जैतारण में नही रह सकते । इसके बाद योगीराज अर्न्तध्यान हो

गए । आज भी उदावत वंश के राठौड़ 384 गांवों में बसे हुए हैं । उक्त इतिहास की जानकारी जैतारण ओसवाल जैन संघ द्वारा प्रकाशित स्मारिका से प्राप्त की ।